https://www.echetana.com/Vol.-11, No.-02, April-June 2026, pp. 64-68

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की ABC प्रणाली के उपयोग की जागरुकता का अध्ययन

अंकिता
बी.एड. एम.एड. छात्रा
डॉ. भारती शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
Email : ankita1592000@gmail.com, Mobile- 7357693426

……………………………………………………………………….
First draft received: 18.04.2026, Reviewed: 22.04.2026
Final proof received: 15.05.2026, Accepted: 23.06.2026

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध 'उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की ABC प्रणाली के उपयोग की जागरुकता का अध्ययन' उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों में ABC प्रणाली के उपयोग की जागरुकता का स्तर समझने का प्रयास करता है। यह शोध ABC प्रणाली की संरचना, ABC प्रणाली की शैक्षणिक प्रक्रियाओं में सहभागिता, शिक्षण–अधिगम में लचीलापन, शैक्षणिक प्रगति में सहायकता और उच्च शिक्षा में करियर उन्मुखता को दर्शाता है। यह प्रणाली एनईपी–2020 के अंतर्गत प्रस्तावित है और इसका उद्देश्य उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को शैक्षणिक क्रेडिट्स को अर्जित करना, संचय करना, स्थानांतरित करना और उपयोग में लाना है तथा शिक्षा को अधिक लचीला और पारदर्शी बनाना है। इस शोध में महाविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः *ABC प्रणाली, एनईपी–2020, शैक्षणिक क्रेडिट्स, शिक्षण–अधिगम में लचीलापन, करियर उन्मुखता।*

प्रस्तावना

भारत की शिक्षा व्यवस्था लंबे समय से पारंपरिक ढाँचे पर आधारित रही है, जहाँ विद्यार्थियों को एक निश्चित संस्थान, पाठ्यक्रम और समयसीमा तक सीमित रहना पड़ता था। यदि किसी कारणवश वह पढाई बीच में छोड़ देता था, तो उसकी अब तक की शैक्षणिक उपलब्धियाँ औपचारिक रुप से सुरक्षित नहीं रहती थीं। परंतु नई शिक्षा नीति ने इस व्यवस्था में लचीलापन लाने का प्रयास किया है। इसी दिशा में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट प्रणाली की शुरुआत की गई है, जो नेशनल एज्यूकेशन पॉलिसी 2020 के महत्वपूर्ण प्रावधानों में से एक है। यह प्रणाली विद्यार्थियों को बहुविकल्पीय अधिगम और Multiple Entry-Exit System की सुविधा प्रदान करती है। इस प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से अर्जित क्रेडिट्स को अपने डिजिटल खाते में सुरक्षित रख सकता है और उन्हें किसी अन्य संस्थान में स्थानांतरित कर सकता है। यह व्यवस्था विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्रता और गतिशीलता प्रदान करती है। यद्यपि यह प्रणाली उच्च शिक्षा को अधिक उपयोगी और लचीला बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, किंतु इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यार्थी इसके प्रति कितने जागरुक है और इसका दृष्टिकोण किस प्रकार का रखते है।

अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट एक डिजिटल शैक्षणिक भंडार है, जहां विद्यार्थी अपने द्वारा अर्जित किए गए शैक्षणिक क्रेडिट को सुरक्षित रुप से जमा कर सकता है। जिस प्रकार एक बैंक में धनराशि जमा की जाती है, उसी प्रकार एबीसी में शैक्षणिक क्रेडिट जमा किए जाते हैं। उच्च शिक्षा में 'क्रेडिट' का अर्थ है– किसी पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने पर प्राप्त अंक/मूल्य, जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थी ने निर्धारित शिक्षण–घंटों और अधिगम परिणामों को पूरा किया है।

क्रेडिट एक यूनिट होती है जो यह दर्शाती है कि छात्र ने किसी विषय में कितने घंटे की पढाई की है। एक सेमेस्टर में आमतौर पर 20 से 24 क्रेडिट्स होते हैं। 1 क्रेडिट = लगभग 15 घंटे की पढाई/कक्षा/प्रैक्टिकल। उदाहरणः यदि एक पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है, तो उसका अर्थ है– 60 घंटे का शिक्षण।

एबीसी प्रणाली का प्रावधान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा किया गया और इसे राष्ट्रीय उच्च शिक्षा अभियान (आरयूएसए) तथा राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा आर्किटेक्चर (एनडीईएआर) के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को 'लर्नर ओनरशिप' प्रदान करना है – अर्थात् शिक्षा का अधिकार, नियंत्रण और दिशा अब विद्यार्थी के हाथ में हो। यह नीति उच्च शिक्षा को 'रिजिड सिस्टम' से निकालकर 'फलेक्जिबल मॉड्यूलर सिस्टम' की दिशा में ले जाती है। यह यूरोप के 'यूरोपियन क्रेडिट ट्रांसफर एण्ड एक्यूम्यूलेशन सिस्टम (ईसीटीएस) की तर्ज पर तैयार की गई है।

समस्या का औचित्य

वर्तमान समय में यह देखा गया है कि अनेक विद्यार्थी एबीसी प्रणाली के नाम से तो परिचित हैं, परंतु इसकी वास्तविक कार्यप्रणाली, लाभ और उपयोग की जानकारी सीमित है। कई बार संस्थान भी इस विषय पर पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं दे पाते, जिसके कारण विद्यार्थी इस नीति का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों की एबीसी प्रणाली के प्रति जागरुकता के स्तर का वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाए।

यह अध्ययन इसलिए भी औचित्यपूर्ण है क्योंकि नीति निर्माण और कार्यान्वयन के बीच की दूरी तभी कम की जा सकती है जब वास्तविक उपयोगकर्त्ता–विद्यार्थी की समझ और अनुभव को जाना जाए। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष नीति निर्माताओं, शिक्षकों और प्रशासकों को यह समझने में सहायता देते है कि एबीसी प्रणाली के क्रियान्वयन में किन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में भी योगदान देता है, क्योंकि एबीसी प्रणाली अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित यूरोपियन क्रेडिट ट्रांसफर सिस्टम के अनुरुप है। यदि विद्यार्थी इस प्रणाली को लेकर पर्याप्त रुप से जागरुक रहते है, तो भारत वैश्विक शिक्षा मानकों के और करीब पहुँच सकता है। अतः यह शोध समस्या न केवल वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, बल्कि भविष्य की उच्च शिक्षा नीतियों के लिए भी दिशा–निर्देशक सिद्ध होती है। विद्यार्थियों में एबीसी प्रणाली की जागरुकता का विश्लेषण यह बताने में सहायक हुआ है कि एबीसी प्रणाली अपने मूल उद्देश्यों की प्राप्ति में कितनी सफल हो रही है और इसे और प्रभावी बनाने के लिए किन सुधारों की आवश्यकता है।

संबंधित साहित्य

1. एच.एम. नवीन (2021) ने 'उच्च शिक्षा में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) की स्थापना और संचालन' का अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य था – उच्च शिक्षा में ABC प्रणाली के कार्यान्वयन और विनियमन का अध्ययन करना। शोध का निष्कर्ष था – इस शोध के निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि एबीसी एक राष्ट्रीय स्तर की सुविधा है जो उचित क्रेडिट हस्तांतरण तंत्र के साथ देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों के पाठ्यक्रम ढांचे के लचीलेपन और अंतःविषय या बहुविषयक शैक्षणिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है और छात्रों को डिग्री या डिप्लोमा या पीजी डिप्लोमा या शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करने के लिए अपना स्वयं का सीखने का मार्ग चुनने की सुविधा प्रदान करती है, जो बहु प्रवेश – बहु निकास के साथ–साथ किसी भी समय, कहीं भी और किसी भी स्तर की शिक्षा के सिद्धांत पर काम करती है। यह अध्ययन पाठ्यक्रमों के व्यापक विकल्प, पाठ्यक्रम में लचीलापन, अनेक उच्च शिक्षा विषयों या संस्थानों में नवीन और आकर्षक विकल्प प्रदान करके छात्रों को महत्वपूर्ण स्वायत्तता प्रदान करता है।
2. डॉ. आलम जोसेफ़ (2022) ने 'अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट – शिक्षा के बदलाव में एक बड़ा बदलावः एक स्टडी' का अध्ययन किया। शोध के उद्देश्य थे – भारतीय संदर्भ में एबीसी को समझना। हायर एज्युकेशन में लर्नर फ्रेंडली अप्रोच को बढ़ावा देना। स्टूडेंट्स को किसी भी यूनिवर्सिटी में अपनी काबिलियत के हिसाब से सबसे अच्छे कोर्स चुनने में मदद करना। हायर एज्युकेशन इंस्टीट्यूट में ड्रॉपआउट कम करने और ग्रॉस एनरोलमेंट रेश्यो को बेहतर बनाने की स्टडी करना। एबीसी पॉलिसी को लागू करने में आने वाली चुनौतियों और स्ट्रेटेजी का पता लगाना। इस शोध में सिंपल रैंडम सैंपलिंग मेथड का उपयोग किया गया है। इसमें सेंट्रल यूनिवर्सिटी और स्टेट सूनिवर्सिटी/प्राइवेट यूनिवर्सिटी जैसे इंस्टीट्यूशन ऑफ नेशनल इंपॉर्टेंस जैसे IITs, IIMs, IISERs और NITs और भारत के अलग–अलग ऑटोनॉमस कॉलेजों के मेडिकल, टेक्निकल और नॉन–टेक्निकल के 1500 स्टूडेंट्स शामिल है। शोध के निष्कर्ष थे – इंडियन हायर एज्युकेशन सिस्टम बहुत वाइब्रेंट, ग्रोथ के लिए तैयार और बड़ा होने के बावजूद इसमें सुधार की बहुत गुंजाइश है। अगर इंडियन एज्युकेशन सिस्टम की तुलना ग्लोबल एज्यूकेटर्स से करें, तो एक कमी दिखाई देती है, जिसमें इंडियन इंस्टीट्यूशन्स दुनिया के टॉप रेटेड इंस्टीट्यूशन्स में शामिल नहीं है। स्टूडेंट को मल्टी–डिसिप्लिनरी बैचलर डिग्री के लिए आजाद चिड़िया बनाया गया है, जिसमें कई एग्जिट ऑप्शन है। यह सिर्फ एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स की वजह से हो सका है।
3. मिस मंगीत कौर, मिस पूजा राणा, मि. गौरव कंबोज (2025) ने 'एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्सः भारत में हायर एज्यूकेशन के लिए एक गेम चेंजर– एक क्रिटिकल एनालाइसिस' का अध्ययन किया। शोध के उद्देश्य थे – विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देना, सीखने वालो के लिए पढ़ाने के आसान तरीकों पर जोर देना, इंटरडिसिप्लिनरी तरीका अपनाना और जिंदगी भर सीखने को बढ़ावा देना, स्टूडेंट्स को अपनी पसंद के कोर्स चुनने देना, चुने हुए सब्जेक्ट के लिए सबसे अच्छे टीचर चुनना, स्टूडेंट्स को अपनी रफ्तार से पढ़ने में मदद करना। यह एक एक्सप्लोरेटरी स्टडी है, इसलिए इसमें मुख्य रुप से सेकेंडरी डेटा पर निर्भर है जो कई जर्नल्स, पीरियोडिकल्स और पब्लिकेशन से इकट्ठा किया गया है। शोध के परिणाम थे – स्टूडेंट्स को अलग–अलग इंस्टीट्यूशन से क्रेडिट कमाने, जमा करने और ट्रांसफर करने की सुविधा देकर ABC स्टूडेंट की मोबिलिटी बढ़ा सकता है और क्रेडिट लॉस कम कर सकता है, नौकरी पाने और करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है। साथ ही ABC लाइफलॉन्ग लर्निंग और प्रोफेशनल डेवलपमेंट को बढ़ावा दे सकता है। हायर एज्यूकेशन में इनक्लूसिविटी और एक्सेसिबिलिटी को बढ़ावा दे सकता है। ज्यादा फ्लेक्सिबल और रिस्पॉन्सिव हायर एज्यूकेशन सिस्टम के डेवलपमेंट में मदद कर सकता है। कुल मिलाकर, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स में भारत में हायर एज्यूकेशन सिस्टम में क्रांति लाने की क्षमता है, और इसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए पॉलिमेकर्स, एज्यूकेटर्स, एडमिनिस्ट्रेटर्स और इंडस्ट्री पार्टनर्स सहित सभी स्टेकहोल्डर्स के मिलकर काम करने की जरुरत होगी।
4. मोहम्मद असराउल हक (2025) ने 'उच्च शिक्षा में क्रांतिकारी बदलावः व्यक्तिगत, लचीली शिक्षा और उन्नत कौशल विकास के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) को एमओओसी के साथ एकीकृत करना' का अध्ययन किया। शोध के उद्देश्य थे – अन्वेषण करना कि छात्र अपने समग्र शैक्षिक अनुभव में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स और मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज (एमओओसी) के एकीकरण को किस प्रकार देखते है। शोध, आलोचनात्मक सोच, संचार और अंतःविषयक दक्षताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, छात्रों के कौशल अधिग्रहण पर एबीसी और एमओओसी के प्रभाव का मूल्यांकन करना। छात्रों की संलग्नता, प्रेरणा और उनकी शिक्षा के स्वामित्व पर एबीसी और एमओओसी द्वारा सुगम बनाए गए व्यक्तिगत शिक्षण पथों के प्रभाव की जांच करना। शोध के निष्कर्ष थे – इस शोध में सर्वेक्षण के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार दोनों का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली सर्वेक्षण के लिए 186 छात्र और साक्षात्कार के लिए 40 छात्रों को शामिल किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट और मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज का एकीकरण सामाजिक विज्ञान के छात्रों की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि कई चुनौतियां बनी हुई है जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। संस्थानों को पाठ्यक्रम की गुणवत्ता बढ़ाने, सुलभता में सुधार करने और छात्र सहायता तंत्र को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

साहित्य विवेचना

उपरोक्त शोध अध्ययन निम्न है – एच.एम. नवीन (2021), डॉ. आलम जोसेफ़ (2022), मिस मंगीत कौर, मिस पूजा राणा, मि. गौरव कंबोज (2025), मोहम्मद असराउल हक (2025)। एच.एम. नवीन (2021) का अध्ययन मुख्य रूप से नीतिगत संरचना पर केंद्रीत हैं। इस शोध के द्वारा आधारभूत स्तर पर छात्र वास्तव में पोर्टल का 'उपयोग' करना जानते हैं या नहीं, इस बात की जानकारी नही मिलती। नियम कागज पर होना अलग बात है और छात्रों का उसे व्यवहारिक रूप से इस्तेमाल करना अलग। वर्तमान शोध इस 'व्यवहारिक उपयोग' की कमी को उजागर करता है। वर्तमान शोध के लिए यह अध्ययन एक आधार प्रदान करता है, क्योंकि विद्यार्थियों में जागरूकता तभी जाँची जा सकती है जब प्रणाली के इन 'लचीलेपन' और 'क्रेडिट हस्तान्तरण' जैसे मुख्य प्रावधानों का ज्ञान हो। डॉ. आलम जोसेफ़ (2022) का अध्ययन यह संकेत देता है कि जागरूकता होने पर छात्र 'आजाद परिंदा' की तरह अपनी शिक्षा का मार्ग चुन सकते हैं। यहाँ 'माइक्रो' (व्यक्तिगत स्तर) पर डेटा की कमी है। क्या व्यक्तिगत रूप से छात्र यह समझता है कि उसकी सहमति के बिना क्रेडिट नहीं निकल सकते? क्या उसे अपनी आईडी 'सत्यापित' करने की प्रक्रिया पता है? यह निष्कर्ष वर्तमान शोध को यह जानने के लिए प्रेरित करता है कि क्या वास्तव में विद्यार्थी स्वयं को इतना समर्थ या जागरूक महसूस करते हैं कि वे इन 'एग्जिट ऑप्शन्स' का लाभ उठा सकें। मिस मंगीत कौर, मिस पूजा राणा, मि. गौरव कंबोज (2025) ने अपने विश्लेषण में स्पष्ट रूप से माना है कि ABC की सफलता सभी हितधारकों, विशेषकर विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर है। उनके निष्कर्ष बताते हैं कि यदि विद्यार्थियों में जागरूकता का अभाव होगा, तो 'क्रेडिट लॉस' जैसे समस्याएँ बनी रहेंगी। यह अध्ययन वर्तमान शोध की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है क्योंकि जागरूकता की कमी ही इस क्रान्तिकारी योजना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हो सकती है। मोहम्मद असराउल हक (2025) का शोध ABC को MOOCs के साथ जोड़कर देखने के छात्रों के नजरिए पर बात करता है। उनका निष्कर्ष कि 'छात्र इसे एक प्रगति के रूप में देखते हैं', यह संकेत देता है कि छात्रों का दष्टिकोण सकारात्मक है। यह शोध यह स्पष्ट नहीं करता कि क्या छात्रों के पास इस एकीकरण को समझने के लिए आवश्यक डिजिटल जागरुकता है। डिजिटल प्लेटफार्म उपलब्ध होना और उसे चलाने की सही जानकारी होना, दो अलग चीजें हैं। वर्तमान शोध इसी 'जागरूकता' के स्तर को मापने का काम करता है।

उपरोक्त शोधों ने ABC प्रणाली के उपयोग व संरचना व इस व्यवस्था की सफलता पर बात की, लेकिन वर्तमान शोध 'छात्र की समझ' पर केंद्रीत है। इन शोध अध्ययनों से प्राप्त हुआ कि शिक्षा प्रणाली में एबीसी का समावेश एक सकारात्मक पहल है। साथ ही यह निष्कर्ष भी प्राप्त हुआ कि इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियां बनी हुई है जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

समस्या कथन

''उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की ABC प्रणाली के उपयोग की जागरुकता का अध्ययन।''

शोध प्रश्न

1. विद्यार्थियों की क्रेडिट संचय और हस्तांतरण की ऑनलाइन प्रक्रिया के बारे में क्या समझ है?
2. क्या विद्यार्थी जानते है कि उनके क्रेडिट्स के सत्यापन में शिक्षण संस्थानों और ABC पोर्टल की क्या भूमिका है?
3. विद्यार्थी ABC प्रणाली के 'बहु–प्रवेश और बहु–निकास' के मुख्य उद्देश्य को किस सीमा तक समझते है?
4. क्या विद्यार्थी मानते है कि ABC प्रणाली उनकी शैक्षणिक पढ़ाई के दौरान 'क्रेडिट लॉस' को रोकने में सहायक है?
5. क्या विद्यार्थी अपनी उच्च शिक्षा को निरंतर रखने के लिए भविष्य में ABC पोर्टल के प्रति सकारात्मक है?

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में ABC प्रणाली के उद्देश्यों की समझ का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की भविष्य में उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में प्रस्तावित उद्देश्यों को देखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जयपुर शहर के महाविद्यालयों में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिसमें स्नात्तक एवं स्नात्तकोत्तर स्तर के विद्यार्थी शामिल किए गए है।

चर

6.3 शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है जो 5 आयामों पर आधरित है –

क. सं.	आयाम	कुल प्रश्न
1	संरचना	8 (प्रश्न संख्या 1 से 8)
2	शैक्षणिक प्रकियाओं में सहभागिता	8 (प्रश्न संख्या 9 से 16)
3	शिक्षण–अधिगम में लचीलापन	8 (प्रश्न संख्या 17 से 24)
4	शैक्षणिक प्रगति में सहायकता	8 (प्रश्न संख्या 25 से 32)

इस स्वनिर्मित प्रश्नावली को चयनात्मक विधि के अंतर्गत डाइकोटोमस स्केल पर तैयार किया गया है।

इसमें 40 प्रश्नों का समावेश किया गया है एवं उत्तरों के विकल्पों में हाँ व नहीं के दो विकल्प दिये गये है। प्रश्नों की प्रकृति सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की रखी गई है।

6.3.1 परीक्षण की वैद्यता

प्रस्तुत शोध उपकरण की विषय–वस्तु वैधता सुनिश्चित करने के लिए इसे शिक्षा जगत के विशेषज्ञों (एक प्रोफेसर और एक एसोसिएट प्रोफेसर) को प्रेषित किया गया। शोध के उद्देश्यों (ABC की कार्यप्रणाली, उद्देश्य/लाभ और भविष्य में उपयोग) के अनुरूप प्रश्नों की प्रासंगिकता की जाँच की गई। विषेज्ञों के सुझावों के आधार पर प्रश्नावली की भाषा को सरल बनाया गया और दोहराव वाले प्रश्नों को हटाकर इसकी रचनात्मक वैधता को सुदृढ़ किया गया।

परीक्षण की विश्वसनीयता

प्रश्नावली की आंतरिक सुसंगति ज्ञात करने के लिए कुडर–रिचर्चसन फोर्मूला 20 (KR-20) का प्रयोग किया गया। यह विधि डाइकोटोम्स स्केल पर आधारित डेटा के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। प्राप्त डेटा की गणना करने पर KR.20 का मान 0.82 प्राप्त हुआ। चूँकि प्राप्त मान 0.70 से अधिक है, अतः यह सिद्ध होता है कि शोध उपकरण उच्च स्तर की विश्वसनीयता रखता है और वास्तविक डेटा संग्रह के लिए उपयुक्त है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्न अंकन पद्धति अपनाई गई है–

प्रश्न की प्रकृति	विकल्प 'हाँ'	विकल्प 'नहीं'
सकारात्मक	1 अंक	0 अंक
नकारात्मक	0 अंक	1 अंक

सांख्यिकी के रुप में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है। प्राप्त परिणामों को पाई चार्ट के माध्यम से दर्शाया गया है।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में डेटा का विश्लेषण उद्देश्यों के आधार पर किया गया है।

उद्देश्य 1: विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की कार्यप्रणाली का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य के माध्यम से जयपुर शहर के महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की संरचना व कार्यप्रणाली का अध्ययन किया गया है।

प्रश्न संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8
प्राप्तांक	139	116	133	134	111	139	120	116
प्रश्न संख्या	9	10	11	12	13	14	15	16
प्राप्तांक	142	102	138	127	122	135	119	125

विद्यार्थियों की कुल संख्या – 200

कुल प्राप्तांक – 2018

कुल अंक – 3200

प्रतिशत = (विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए अंक/कुल अंक) × 100

= (2018/3200) × 100

= 63.06%

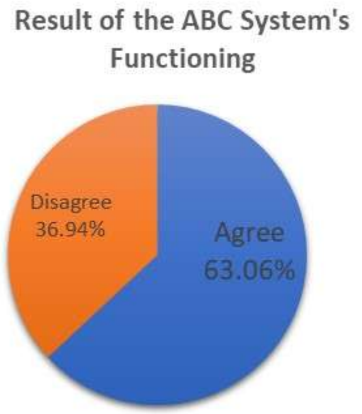

उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि ABC प्रणाली की कार्यप्रणाली की समझ रखने वाले विद्यार्थियों का कुल प्रतिशत 63.06 प्राप्त हुआ है। इसके परिणाम में प्रश्न संख्या 9 की जागरुकता विद्यार्थियों में ज्यादा देखी गई जो कि शैक्षणिक प्रकियाओं को ट्रैक करने हेतु ABC Id बनाना अनिवार्य है या नहीं, इसके बारे में बताता है। अतः विद्यार्थियों को इस बात की जानकारी है कि उनके शैक्षणिक प्रकियाओं को ट्रैक करने हेतु ABC Id बनाना अनिवार्य है। साथ ही, प्रश्न संख्या 10 जो कि ABC पोर्टल पर विद्यार्थियों द्वारा स्वयं अपने अर्जित केडिट को अपलोड करने से संबंधित है, की जागरुकता सबसे कम पाई गई।

उद्देश्य 2: विद्यार्थियों में ABC प्रणाली के उद्देश्यों/लाभों की समझ का अध्ययन।

प्रश्न संख्या	17	18	19	20	21	22	23	24
प्राप्तांक	122	128	133	130	117	112	124	125

विद्यार्थियों की कुल संख्या – 200

कुल प्राप्तांक – 991

कुल अंक – 1600

प्रतिशत = (विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए अंक / कुल अंक) × 100

= (991 / 1600) × 100

= 61.93%

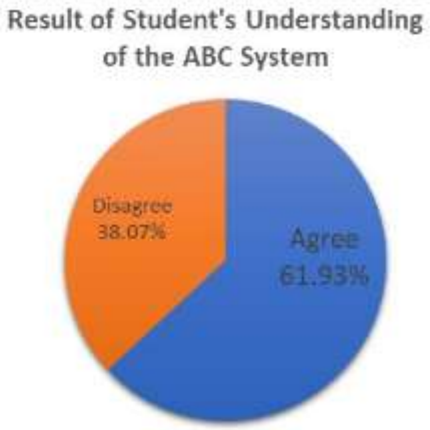

उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि ABC प्रणाली के उद्देश्यों की समझ रखने वाले विद्यार्थियों का कुल प्रतिशत 61.93 प्राप्त हुआ है। इसके परिणाम में प्रश्न संख्या 19 की जागरुकता विद्यार्थियों में ज्यादा देखी गई जो कि पारंपरिक कक्षाओं के साथ–साथ 'स्वयं' जैसे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से भी क्रेडिट अर्जित करने के बारे में बताता है। अतः विद्यार्थियों को इस बात की स्पष्ट जानकारी है कि पारंपरिक कक्षाओं के साथ–साथ 'स्वयं' जैसे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से भी क्रेडिट अर्जित किये जा सकते है। साथ ही, प्रश्न संख्या 22 जो कि एक डिग्री को अलग–अलग हिस्सों में एक से अधिक विश्वविद्यालयों से पूरा कर पाने से संबंधित है, की जागरुकता सबसे कम पाई गई। इन प्राप्त अंकों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों में एबीसी प्रणाली के उद्देश्यों से संबंधित जागरुकता का स्तर सामान्य है।

उद्देश्य 3: विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की भविष्य में उपयोगिता का अध्ययन करना।

प्रश्न संख्या	25	26	27	28	29	30	31	32
प्राप्तांक	124	118	134	134	124	115	110	127
प्रश्न संख्या	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
प्राप्तांक	120	126	122	120	121	118	130	124

विद्यार्थियों की कुल संख्या – 200

कुल प्राप्तांक – 1967

कुल अंक – 3200

प्रतिशत = (विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए अंक / कुल अंक) × 100

= (1967 / 3200) × 100

= 61.46%

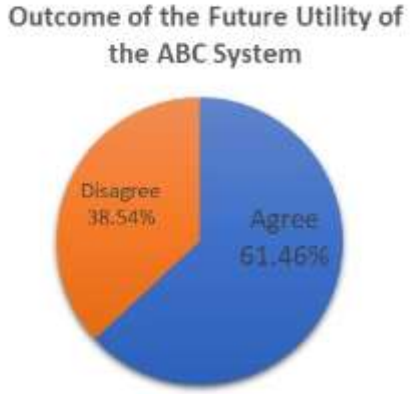

उपरोक्त पाई चार्ट से स्पष्ट होता है कि ABC प्रणाली के भविष्य में उपयोग की समझ रखने वाले विद्यार्थियों का कुल प्रतिशत 61.46 प्राप्त हुआ है। इसके परिणाम में प्रश्न संख्या 27 व 28 की जागरुकता विद्यार्थियों में ज्यादा देखी गई जो कि क्रमशः विभिन्न संस्थानों के बीच 'क्रेडिट ट्रांसफर' की जटिल प्रक्रिया को सरल बनाने से संबंधित एवं यह प्रणाली केवल रेगुलर विद्यार्थियों के लिए सहायक है या नहीं, इसके बारे में बताता है। अतः विद्यार्थियों को इस बात की जानकारी है कि यह प्रणाली विभिन्न संस्थानों के बीच 'क्रेडिट ट्रांसफर' की जटिल प्रक्रिया को सरल बनाती है तथा यह प्रणाली सभी विद्यार्थियों के लिए सहायक है। साथ ही, प्रश्न संख्या 30 जो कि विद्यार्थियों द्वारा अपनी शैक्षणिक क्षमताओं के अनुसार पाठ्यक्रम की गति तय करने से संबंधित है, की जागरुकता सबसे कम पाई गई।

परिणाम

इस शोध के परिणाम में पाया गया कि उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की ABC प्रणाली की कार्यप्रणाली, उद्देश्य, लाभ एवं इसके उपयोग की जागरुकता का कुल प्रतिशत 62.20% प्राप्त हुआ तथा 37.80% विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की कार्यप्रणाली, उद्देश्य, लाभ एवं इसके उपयोग से संबंधित जागरुकता की कमी पाई गई।

निष्कर्ष

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थी ABC प्रणाली के बारे में जानते तो है किंतु उन्हें ABC प्रणाली की संरचना, उद्देश्यों, लाभों एवं भविष्य में उपयोगिता के बारे में स्पष्ट जानकारी नही है। विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की संरचना, उद्देश्यों, लाभों एवं भविष्य की जानकारी सीमित है। नीति–निर्माताओं को इसकी जागरुकता के लिए कुछ प्रयास करने चाहिए, जैसे संस्थान द्वारा अपने स्तर पर सेमिनार आयोजित किये जाये ताकि विद्यार्थी एबीसी की कार्यप्रणाली को व्यापक रुप से जान सके।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्न हैं–

- विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की संरचना, उद्देश्यों, लाभों एवं भविष्य में उपयोगिता की जागरुकता में कमी पाई गई। अतः महाविद्यालयों में नियमित कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ आयोजित किए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थी इस प्रणाली को अच्छे से समझ सके।
- विद्यार्थियों में ABC प्रणाली की तकनीकी संरचना की जानकारी का अभाव है, अतः विद्यार्थियों की डिजिटल साक्षरता के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- विद्यार्थी ABC पोर्टल का पर्याप्त उपयोग करना नही जानते है। अतः विद्यार्थियों को ABC पोर्टल के उपयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को क्रेडिट संचयन एवं अंतरण के लाभों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान किया जाए ताकि वे इस प्रणाली को और अधिक अच्छे से समझ सके।
- ABC प्रणाली के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा की जाए ताकि विद्यार्थियों में इस प्रणाली को लेकर जो भी समस्याएं उत्पन्न होंगी उसका निवारण किया जा सके।

भावी शोध हेतु सुझाव

- भविष्य में सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की ABC प्रणाली के प्रति जागरुकता के बीच एक तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इसके अलावा, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के बीच भी तुलना की जा सकती है।
- वर्तमान शोध केवल विद्यार्थियों तक सीमित है। आगामी शोध में शिक्षकों, प्राचार्यो और विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों की जागरूकता और उनके दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि इस प्रणाली के क्रियान्वयन में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।
- ABC प्रणाली को प्रभावी ढंग से लागू करने में आने वाली तकनीकी और प्रशासनिक बाधाओं (जैसे– डेटा सुरक्षा, क्रेडिट वेरिफिकेशन में देर आदि) पर एक गहन गुणात्मक शोध किया जा सकता है।
- विभिन्न संकायों के बीच यह अध्ययन किया जा सकता है कि क्या व्यावसायिक पाठ्य–क्रमों जैसे (B.Tech, MBA) के छात्र पारंपरिक पाठ्य–क्रमों (B.A., B.Sc.) के छात्रों की तुलना में ABC का उपयोग करने में अधिक सक्षम हैं।
- भविष्य में शोधार्थी इस पर प्रयोगात्मक शोध कर सकते हैं कि जागरूकता कार्यशालाओं या ओरिएंटेशन प्रोग्राम के बाद विद्यार्थियों की जागरूकता और उपयोग के स्तर में कितना सार्थक सुधार हुआ है।

- विद्यार्थियों की सामान्य डिजिटल साक्षरता और ABC पोर्टल के उपयोग के बीच सह–संबधं का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- एच.एम. नवीन (2021). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग अप्लाइड साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम 6, उच्च शिक्षा में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (एबीसी) की स्थापना और संचालन।
- डॉ. आलम जोसेफ़ (2022). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एज्यूकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 11, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट – शिक्षा के बदलाव में एक बड़ा बदलावः एक स्टडी।
- मिस मंगीत कौर, मिस पूजा राणा, मि. गौरव कंबोज (2025). इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, वॉल्यूम 10, एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्सः भारत में हायर एज्यूकेशन के लिए एक गेम चेंजर– एक क्रिटिकल एनालाइसिस।
- मोहम्मद असराउल हक (2025). उच्च शिक्षा में क्रांतिकारी बदलावः व्यक्तिगत, लचीली शिक्षा और उन्नत कौशल विकास के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) को एमओओसी के साथ एकीकृत करना।
- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (2021) तकनीकी शिक्षा हेतु क्रेडिट रुपरेखा, नई दिल्ली।
- भारत सरकार (2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 क्रियान्वयन योजना, नई दिल्ली।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2021) एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC) हेतु दिशा–निर्देश, नई दिल्ली।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2022) बहु–प्रवेश एवं बहु–निर्गम प्रणाली के संचालन संबंधी दिशा–निर्देश।

वेब लिंक

https://ddugu.ac.in/abc.php

https://www.abc.gov.in/ Academic Bank of Credits(ABC) Portal

https://www.iitms.co.in/blog/what-is-academic-bank-of -credit.html

https://www.education.gov.in/nep